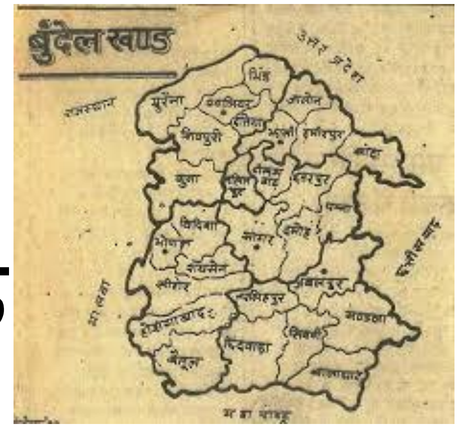
अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





लोक नृत्य
Folk Dance

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

लोक नृत्य **Folk Dance**

लोक नृत्य Folk Dance

अध्याय शीर्षक	लोक नृत्य
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन/ **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण/मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ/साभार/सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

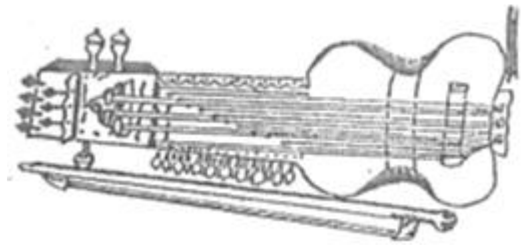
Chapter Heading	**Folk Dance**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

लोक नृत्य Folk Dance

लोक नृत्य **Folk Dance**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

लोक नृत्य



लोक नृत्यों का सन्क्षिप्तिकरण

लोक नृत्य		
	1 आदिवासियों के लोकनृत्य	
		1 करमा(कदम्ब / करम वृक्ष) नृत्य
		2 लहकी करमा
		3 थादी करमा
		4 झूमर करमा या झमुलिया
		5 खलहा करमा या झमुलिया
		6 सुआ नृत्य
		7 शैताम नृत्य
		8 शैला नृत्य
		9 भरौली शैला
		10 हरौनी शैला
		11 लहकी शैला नृत्य
		12 झुलनियां लहकी शैला नृत्य
		13 बैठक शैला
		14 शिकार शैला
	अकुत्रि	
	2 सार्वजनिक लोकनृत्य	
		1 दिवारी
		2 सैरा नृत्य
		3 राई नृत्य
		4 झिझिया नृत्य
		5 मौनिया नृत्य
		6 ज्वारा
		7 ढीमराई नृत्य
		8 कानड़ा/धुबियाई नृत्य
		9 रावला
		10 अहारी नृत्य
		11 कहरवा नृत्य
	अकुत्रि	
	3 पारिवारिक लोकनृत्य	
		1 रास बंधाना नृत्य
		2 चंगेल नृत्य
		2 सैरा नृत्य

लोक नृत्य **Folk Dance**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

1	मौनिया व दीवारी नृत्य/ पाई डंडा/ बरेदी–नृत्य
2	राई नृत्य
3	गढ़ाकोटा की राई (नृत्य)
4	देशी राई–नृत्य
5	कांडरा–नृत्य/ धोबी समाज का नृत्य
6	होली नृत्य–
7	सखयाऊ
8	डिढ्खुरयाऊ फाग
9	घट नृत्य
10	जवारा नृत्य
11	पटा बनैती नृत्य
12	पालना नृत्य
13	बधाई नृत्य
14	चांचर नृत्य
15	चांचर मशाल नृत्य
16	रैया नृत्य
17	बिलवारी नृत्य
18	कजरी
19	सैरा नृत्य
20	झिझिंया नृत्य
21	ढीमरयाई/ढिमरियाई एवं कांडरा– नृत्य
22	लमटेरा नृत्य
23	रावला नृत्य
24	स्वांग
25	कहरवा नृत्य
26	कोलिहा नृत्य–
27	ख्याल
28	भगतें
29	बीरोठ
30	गोटें
31	स्त्रियों के गीत
32	झिंझिया नृत्य

लोक नृत्य Folk Dance

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

मौनिया व दीवारी नृत्य/ पाई डंडा/ बरेदी–नृत्य

यह नृत्य दण्ड–युद्ध–कौशल का प्रतीक है। अहीरों अथवा अन्य पशु पालक जातियों, द्वारा दीवाली के अवसर पर किया जाता है। इसे बरेदी नृत्य भी कहते हैं। नर्तक फूंदनादार बण्डी तथा रंग बिरंगे जाँघिया पहनते है। कमर में घुंघरओं का पट्टा बांधे रहते हैं। दिवारी मे नर्तक अपनी ऊंचाई के बराबर के दण्ड लिये रहते हैं जबकि हाथ में लगभग डेढ़ फुट लम्बी डंडियां लेकर नृत्य करने पर इसे पाई–डण्डा कहते हैं। अकुत्रि नृत्य के डण्डों के घात–प्रतिघात से नृत्य–संगीत की रचना होती है। प्रमुख वाद्य ढोलक एवं नगड़िया है। नृत्य दो पंक्तियों की टेर से प्रारम्भ होता है।

दीपावली अमावस्या पर यादवों के द्वारा मनाने वाले त्योहार मोहनिया उपवास रखा जाता है और हाथ में मोर पंख लिए अपने साथियों के साथ दीपावली के दिन नदी में जाते हैं। नदी में स्नान कर अपने मोर पंखों को पानी में डुबोकर उनको भी स्नान कराते हैं इन्हें मनिया या मोहिनी या मोहनिया भी कहते हैं। नृत्य करते हुए मंदिरों की पूजा आराधना करते हुए अपने घर पर पहुंचते हैं और जलपान करते हैं। रात में मोर पंख पर दीपक को उसके ऊपर रखकर जलाकर पूजा करते कार्य संपन्न किया जाता है। परेवा को मोहनिया मौन व्रत को रखकर जंगल से होते हुए गांव के बाहर जहां गांव की सीमा होती है डांड पर स्थित देवी देवताओं की पूजा अर्चना कर प्रसाद को चढ़ाते हैं। शाम को गौधूली के समय गांव में आकर गाय की पूजा कर मौन चरा कर मौन व्रत को समाप्त करते हैं इस समय इस मौनिया अपना दिवारी नृत्य भी करते हैं। यह एक लंबा और देखने योग्य, लाठी से लड़ने वाला नृत्य होता है। समय के साथ इसमें भी आधुनिकरण हो गया है। जी मौनिया गायों को चराते हुए अपने नगर गांव पहुंचते हैं और यहां पर विपरीत दिशा से आने वाले मौनियों से आपस में मिलते हैं और लाई दाना और बताशा गट्टा का प्रसाद भी वितरित करते हैं।

नृत्य के साथ गए जाने वाली दिवारी की कुछ पंक्तियां
बाबा नंद के छौना, तुमने भली डराई रीत।
कातिक के महीना मां घर–घर दीन सूचना
व देश दिवारी दो दिना, मथुरा 12 मास,
नित राही गोवर्धन धरे, कान्हा खिलावें गाय।

रेफरेंस बांदा हिस्ट मोनी 3

अकुत्रि

दिवारी पाई डंडा नृत्य श्री कृष्ण लीला पर आधारित नृत्य है। जो उनके गाय चराने के समय यदुवंशीय युद्ध कला का परिचायक है। भाद्रपद की पंचमी से पौष – माघ माह की मकर संक्राति तक यह नृत्य होता है। बुन्देलखण्ड के खासकर बाँदा जिले में गाँव – गाँव यादव जाति के युवा और बाल समूह बनाकर इसका प्रदर्शन करते है। इसमे समूह में लाठी चलाने की युद्ध कला, आत्मरक्षा हेतु वीरता प्रदर्शन, आग के गोले से निकलना, सजे हुए वेश में अपनी युद्ध कला का नाचते हुए कौशल के साथ मंचन ही इसकी आकर्षण है। इसके लिए सर्दी, गर्मी में भी ये युवा गाँवो में आखाड़ा तैयार करके प्रशिक्षण लेते है। नृत्य के समय आकर्षक वेश भूषा में लाल फुलरा गुल गंद, पाँव में घुंघरू, सर पर पगड़ी या साफी बांधकर छोटे – छोटे डंडे, लाठी से नाचना होता है। मूलतः यह नृत्य बुन्देली शौर्य को प्रमाणित करता है। सर्दी में भी खुले बदन लंगोट कसकर ये छोटे – बड़े साथी कठोर मेहनत से अपने हुनर को आने वाली अगली पीढ़ी में हस्तान्तरित कर रहे है।

दीपावली में गोचारण रहूंनिया के लिए छोड़ी गई जमीन को मोहनिया बाजार कहते हैं सैकड़ो वर्षों से दीपावली के अवसर पर मौनियों के द्वारा गौचारण कर मौन चराने का काम किया जाता है। यह एक पुरानी परंपरा है गाय के आगे सूअर फेंक कर लठमार होली या दिवारी खेलने की परंपरा है। नगर के या गांव के राहुनिया में नई गाय अर्थात जिसके अभी बच्चा हुआ हो को भैया दूज के दिन गाय के सामने सूअर फेंक कर लठमार होली /दीवारी खेली जाएगी /जाती है। कई घंटे तक लोग इस खेल को धुन के साथ नृत्य भी करते हैं इसके पीछे एक विशिष्ट कहानी भी है। दिवाली खेलने वाले यादव बिरादरी के लोग इसमें शरीक होते हैं दिवाली खेलने की परंपरा उनके पूर्वजों से चली आ रही है। बिना सूअर के गांव की लठमार होली/दीवारी सूनी रहती है। देवरी लटका तोलिया व अपने शस्त्र प्रदर्शन करती हैं दिवाली के दिन से शुरू होने वाली दीवारी नृत्य का प्रदर्शन देवस्थान एकादशी तक होता है। गांव के युवा तोलियां में हाथों में लाठियां लेकर घुंघरू बांधकर निकलते हैं और अपने युद्ध कला का प्रदर्शन करते है।





लोक नृत्य Folk Dance

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





साभार

लोक नृत्य **Folk Dance**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

राई (नृत्य)

रसिक वर्ग को रिझाने के लिए रतिमुद्रा प्रधान राई नृत्य मुख्यतया बेड़नी जाति की महिलाओं का बासन्तिक–नृत्य है। नर्तकी सोलह कली का रंग बिरंगा घाघरा तथा चोली पहनती एवं झीनी चूनरी ओढ़ती है। नर्तकी के साथ मृदंग वादक भी नाचता है। प्रमुख वाद्य रमतूला ,तुरही, ढोलक, नागड़िया, झीन्का, खंजड़ी तथा मजीरा हैं। नृत्य के साथ फागे, विशेषकर ईसुरी की द्विअर्थी फागें गाई जातीं हैं।

गढ़ाकोटा की राई (नृत्य)

बुन्देली नृत्य विधाओं में राई प्रमुख नृत्य है। इसको समूह में किया जाता है। इस नृत्य को बेड़िनी जाति विशेष की स्त्रियाँ ही करती हैं। कम से कम दो तथा अधिक से अधिक 5 कलाकार भाग लेती हैं। यह नृत्य खुले स्थान (चौपाल) आदि में किया जाता है। इस नृत्य में प्रमुख रूप से ढोलक या पखावज, नगड़िया झीन्का मंजीरा (कांसी) बजाया जाता है तथा इन को कमर में बॉध कर बजाया जाता है। जन समूह गोल बड़े घेरे में खड़ा होता है तथा बीच में नृत्य किया जाता है। नृत्य कलाकार के साथ संगतकार भी चल कर साज बजाते हुये चलते जाते हैं। नृत्य कलाकार स्वयं ही पद गायन करते हैं, जो कि मुख्य रूप से दो पंक्तियों का होता है। गायन विलम्बित लय से प्रारम्भ होता है तथा धीरे–धीरे प्रत्येक पद के बाद लय बढ़ती जाती है। दो प्रकार की राई बुन्देलखण्ड में देखने को मिलती है

प्रथम प्रकार की	राई जिसे "गढ़ाकोटा की राई'' कहते हैं।
दूसरा प्रकार की	देशी राई कहलाता है।

गढ़ाकोटा का राई नृत्य ताल दादरा से विलम्बित लय से प्रारम्भ होता है। शास्त्रीय रूप से ताल दादरा का वादन नहीं होता है। क्योंकि लोक, शास्त्रीयता के बन्धन को स्वीकार नहीं करता है। लोक तो भाव प्रधान है। उन्मुक्त पहाड़ी नदी की तरह होता है। वह तो गायक या नृत्य कलाकार के पद चाप के अनुसार ताल के प्रकार (बनावट) का चुनाव कर लेता है।अकृत्रिचूंकि कहरवा एवं दादरा ताल नैसर्गिक लय साम्य है अतः लोक के वादक इन्हीं लय साम्यों को ही अधिक पसन्द करते हैं। इनके वादन में दादरा एवं कहरवा के लय साम्य ही अधिक सुनाई पड़ते हैं। गढ़ाकोटा की राई के पद इस प्रकार के होते हैं।

गोरी रे उठ कर लेओ सिंगार
मेड़े पे आ गये रे तोरे बालमा
साखी–अरे पैलऊ गा लएं रे, गौरा के गनेस
सुर खों मना लए मइयां सारदा

पद– 1– गोरी रे उठ कर ले सिंगार, मेड़े पे आ गए तोरे बालमा
अरे हरे मेड़े पे आ गए तोरे बालमा
पद– 2– अरे राजा रे कैसे कर लए बिस्वास, मोखों भरोसे रए नइयां
पद– 3– अरे देवरा रे कैसे कर लए बिस्वास, मोखों भरोसे रए नइयां
पद– 4– अरे खोले रई ती किवार, बेदर्दी आए नइयां–––
अरे लीली बछिडिया चिततकबरू पतरइया सवार
देखई न पाए नजर भर के, अरे खुल रई ती किवार –––
पद– 5– अरे बालापन की यारी होय टोरो नै यार
टोरो से दुख होवे, बालापन की चिनार, बेदर्दी आए नइयां–––
पद– 6– अरे द्वारे में से कढ़ गए, हेरी बोले नै यार, हेरत रई हमई कों–––
पद– 7– अरे द्वारे में से कढ़ गए, हेरै नै यार
देखत रई गैल तुम्हारी, खोले रई ती किवार, बेदर्दी आए नइयां–––

गीत के प्रारम्भ होते ही पखावज में तराश मारते हुये ठेका प्रारम्भ होता है। पखावज पर ता बजाते हैं जो कि दिं सुनाई पड़ता है। नगड़िया भी साथ में बजती है।

देशी राई–नृत्य

लोक नृत्य Folk Dance

बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध नृत्य राई के दूसरे प्रकार को देशी राई कहा जाता है। देशी राई तथा गढ़ाकोटा की राई में थोड़ा अन्तर होता है। इस राई नृत्य में कम से कम दो, और अधिक से अधिक पांच नर्तक कलाकार होते हैं। यह नृत्य चौपाल या खुले मैदान में किया जाता है। इस नृत्य में एकत्रित जन समूह वृत्ताकार खड़ा होता है। वृत्त के केन्द्र में नृत्य किया जाता है। नृत्य में स्त्री पुरूष दोनों ही भाग लेते हैं। जिनकी संख्या सम विषम कुछ भी हो सकती है। नृत्य में संगत करने वाले संगतकार सभी पुरूष वर्ग के होते हैं। नृत्य के साथ बजने वाले वाद्य में ढोलक या पखावज, नगड़िया झीन्का, मंजीरा तथा अलगोजा आदि होते हैं। देशी राई तथा गढ़ाकोटा की राई के पद में अन्तर होता है। लय एवं ताल में अन्तर होता है। गढ़ाकोटा की राई में कहरवा ताल का अधिकांश प्रयोग होता है, जबकि देशी राई में कहरवा एवं दादरा दोनों ही ताल का प्रयोग होता है, जो कि लयकारी के सदृश सुनायी पड़ता है। देशी राई के गीत में प्रश्नोत्तर की शैली का प्रयोग अधिक होता है। स्त्री एवं पुरूष दोनों एक दूसरे के प्रश्नों का उत्तर देते हैं। नृत्य का प्रारम्भ होने से पहले गीत की दो पंक्तियाँ ताल रहित गाई जाती है, जो विलम्बित लय में रहती है। देशी राई के इस नृत्य गीत का प्रारम्भ ताल दादरा से होता है, जो कि मध्य लय में होता है।अकुत्रि

अरे भौजी रे अरे काय मार गई रार 139पेज
अरे तेहारी अरे तोरे लाभ भए
देखे रे देवरा के सरीर
बिस दैके मारे मोरे बालमा

नदिया रे तेरे औघट घाट
कां हां निकर गए मोरे बालमा

छैला रे तोय ऐसो नवाए
जैसे नदी कौ गोंदरा

गोरी रे मोरी भर गई देह
तौरे नवाए नै नभै

इसी के साथ वाद्यों का बजना प्रारम्भ होता है। सभी वाद्य एक साथ बजते है। जो सुमधुर प्रतीत होता है। उनमे किसी एक वाद्य को अलग सुनना असंम्भव सा प्रतीत होता है। ढोलक तथा नगडिया के साथ ताल दादरा के लय साम्य दिखते हैं। ताल दादरा के बोल इस प्रकार सुनायी पड़ते है।

	1	2	3	|	4	5	6
1	धा	तड़	तड	|	ता	तड़	तड़
2	धा	तड़	तड	|	तक	धिं	न्ना
3	धा	धिं	न्ना	|	तक	धिं	न्ना
4	धिं	तड़	तड	|	ऽऽ	धिं	न्ना

इस नृत्य में संगतकार ढोलक तथा नगड़िया कमर में बांध लेते हैं। क्योंकि नृत्य कलाकार पूरे वृत्त में घूम घूम कर नृत्य करते हैं। संगतकारों को भी नृत्य कलाकारों के साथ चल चल कर बजाना पड़ता है। स्थाई तथा अन्तरे के मध्य जो अन्तराल रहता है, उसमें नृत्य की लय थोडी बढ़ जाती है तथा ताल में भी अन्तर आ जाता है। ताल दादरा के लय साम्य ना दिख कर ताल कहरवा के खण्ड दिखने लगते हैं। वजन को ध्यान में रखकर सुना जाय तो स्पष्ट कहरवा ही लगता है, जो कर्ण प्रिय होने के साथ रोमांच पैदा करता है। ढोलक तथा नगड़िया मिल कर इस प्रकार का ठेका बजाते हैं जिसमें ताल दादरा तथा ताल कहरवा दोनों का निर्वाह किया जा सकता है। अन्तराल समाप्त करने के लिए तिहाई या छोटे छोटे मोहरों का प्रयोग किया जाता है।अकुत्रिप्रत्येक अन्तरे के बाद लय बढ़ती जाती है। अन्तरे की पहली पंक्ति के साथ खाली बोल बजाये जाते है।

<u>कांडरा–नृत्य/ धोबी समाज का नृत्य</u>

कॉडरा नृत्य एक जातीय नृत्य है। यह नृत्य धोबी समाज का नृत्य हैं, जिसे धोबी जाति के लोग अपने समाज के समक्ष करते हैं। यह नृत्य उत्सव के समय किया जाता है। यह नृत्य पुरूष प्रधान है, इस नृत्य को एक पुरूष करता है। इस नृत्य का परिधान धोती, अंगरखा, साफा हैं। नृत्य के समय पैरों में घुंघरु एवं हाथों में केंकड़िया वाद्य रहता है। नर्तक नृत्य के अलावा गाता एवं केंकड़िया भी बजाता है। इस प्रकार एक ही व्यक्ति तीनों काम एक साथ करता है।

इस नृत्य में पखावज, मंजीरा, लोटा एवं केकड़िया का वादन किया जाता है। इस नृत्य के समय समाज के लोग गोल घेरे में बैठते हैं। बीच में नर्तक नृत्य करता है। नृत्य का प्रारम्भ केकड़िया वादन से होता है। इस नृत्य में भी पहले साखी गायी जाती है।

सबखों मेरी बन्दगी, मितरन कों परनाम
का छोटे और का बड़े, सब खों सीता राम।।"

साखी के बाद गीत प्रारम्भ होता है।

बलमा मिल गये होरी में, खुशी भयी मोरे मन में

गीत के साथ अवनद्ध वाद्यों का प्रारम्भ एक लम्बी लड़ी के साथ होता है। पखावज पर धातिं धातिं धातिं धातिं लड़ी बजायी जाती है। तत्पश्चात ठेका प्रारम्भ होता है। यह नृत्य कहरवा–ताल में होता है। इस नृत्य के साथ बजने वाले वाद्यों में लुटिया एवं मंजीरा की अधिकता है। स्थाई एवं अन्तरे के बीच का समयान्तर केंकड़िया–वादन के द्वारा पूर्ण किया जाता हैं।

धिं ताकधिंधिं ताकधिं इस प्रकार ठेके को उलट–पलट कर इसके कई प्रकार बजाये जाते हैं।

1	2	3	4	5	6	7	8
धिंऽऽता	ऽकधिंऽ	धिंऽऽता	ऽकधिंऽ	तिंऽताऽ	ऽकधिंऽ	धिंऽऽता	ऽकधिंऽ
ताऽकता	ऽकधिंऽ	ताऽकता	ऽकधिंऽ	धिंऽऽता	ऽकधिंऽ	धिंऽधिंऽ	ताऽताऽ
धातड़	धातड़	धातड़	धातड़	धातड़	धातड़	धातड़	धातड़

इस नृत्य में तिहाइयों का अल्प प्रयोग है। तिहाइयों के स्थान पर छोटे–छोटे मुहरों का प्रयोग किया जाता है। लुठिया तथा मंजीरें का प्राबल्य होने के कारण पखावज की आवाज कम ही सुनायी पड़ती है। फिर नृत्य के पद चापों के अनुसार ठेके के बोलों पर वजन देकर नये प्रकारों का प्रयोग होता है। लोक में वादन का नियम नहीं है, ना कोई शास्त्र है, वह तो वादक की अपनी मस्ती है। वह कभी प्रारम्भ के बोलो पर वजन देता है, तो कभी बीच में, कभी अन्तिम बोलों पर वजन देता है। अधिकांश ठेके के प्रकार को पलट दिया जाता है। जिससे लयात्मक स्वरूप बदल जाता है और लयकारी दिखाई देने लगती है। यद्यपि लोक वादकों को यह पता नहीं होता है कि वह क्या कर रहे हैं, क्योंकि शास्त्र का उन्हें ज्ञान नहीं है। इन्ही प्रकारों को जब तबले पर बजाना पड़े तो वादक उसकी लय एवं लयकारियों को ध्यान में रखकर बजायेगा, किन्तु लोक वादक नियम एवं शास्त्र से दूर अपनी मस्ती में रहता है। वह स्वच्छन्द रहता है एवं नर्तक के हाव–भाव उसके पद चापों के अनुसार अथवा गीत की मांग के अनुरूप ही ठेके के प्रकार बजाता है जो उसके स्वयं के विवेक के ऊपर निर्भर करता है।

होली नृत्य–

होली के अवसर पर गांव के फड़ पर फागों की लय तथा ताल पर गुलाल उड़ाते ग्रमीणों का यह नृत्य अत्यन्त आकर्षक होता है। प्रमुख वाद्य–ढोलक, मजीरा, बांसुरी, करताल, चमीटा आदि प्रयुक्त होते हैं।

सखयाऊ

बुन्देलखण्ड में फाग गायन स्त्री पुरुष दोनों ही वर्गों में होता है। किन्तु दोनों की गायन शैली अलग है। गीत के बोलों में भी अन्तर होता है। सखयाऊ फाग पुरूष वर्ग ही गाता है। इस गायन में ढोलक, मंजीरा, झीन्का, नगड़िया एवं लोटा का प्रयोग होता है। प्रारम्भ में साखी बोली जाती है, जो ताल रहित होती है। उसके बाद फाग के बोल प्रारम्भ करते हैं। यह विलम्बित लय में प्रारम्भ की जाती है। इस गायन में दादरा ताल के प्रकार बजाये जाते हैं।

चार खूटें को चौतंरा लम्बे भरे बाजार

सुगर–सुगर सौदा करें रे, सो मूरख फिर फिर जाएं, अतर के फोहा धरे दोई बालमा

इसके साथ विलम्बित लय ताल दादरा बजाया जाता है।

1	2	3	|	4	5	6
धा	धिं	ना	|	ता	तिं	ना
•			|0			

ढोलक के साथ नगड़िया के बोलों का मिश्रण रहता है। नगड़िया पर तड़ तड़ तड़ तड़ की लड़ी एक या दो आवर्तन बजाते हैं और पुनः उसी ठेके पर आ जाते हैं। प्रत्येक अन्तरे के साथ लय बढ़ जाती है। बाद में कहरवा गीत गाते हैं।

सीता को पता लगा दे मोरे भइया, हाँ राम कहै लछमन सें।

डिढ़खुरयाऊ फाग

फाग की इस विद्या में भी पुरूष वर्ग भाग लेता है। इसमें भी ढोलक नगड़िया, झीन्का मंजीरा आदि बजाया जाता है। डिढ़खुरयाऊ फाग एवं सखयाऊ फाग के गीत तथा धुन अलग अलग होती है।प्रारम्भ में गीत अत्यन्त विलम्बित लय में होता है। जिसमें ताल दादरा का प्रयोग होता है।

1	2	3	|	4	5	6
धा	धिं	ना	|	ता	तिं	ना
•			|0			

प्रत्येक अन्तरे के साथ लय बढ़ती जाती है। ढोलक के साथ नगडियों के बोलों का मिश्रण होता है। जो अन्त की दो मात्राओं में तड़ तड़ के रूप में सुनायी पड़ती है।

घट नृत्य

बुन्देलखण्ड के कुओं में जलस्तर गहरा होने से पनहारी महिलायें सिर पर चार–चार घड़े लेकर चलती हैं। रास्ते मेँ बाजा, ठपली, ळसमू बजते ही उसके पैर थिरकने लगते हैं। इसमें सिर पर घड़ों का संतुलन दर्शनीय है। मुख्यतया यह नट जाति का नृत्य हैं। इसमें गीत नहीं गाते हैं। केवल वाद्य के सहारे नृत्य चलता है।

जवारा नृत्य

देवी पूजा के क्रम में देवी गीतों (अचरी तथा भगत) के साथ भक्तगण यह नृत्य करते हुये चलते है। महिलायें सिर पर जवारे रखकर चलती हैं। एक व्यक्ति पूजा का थाल लेकर चलता है।एक व्यक्ति सांग (लोह की छड़) गाल में फंसाकर चलता है। नर नारी देवी गीत गाते हुए चलते हैं। प्रमुख वाद्य ढोलक, नगड़िया, झीका, मजीरा, बांसुरी तथा लोटा हैं।

पटा बनैती नृत्य

तलवार तथा पटा का यह नृत्य युद्ध कौशल का नृत्य है। कुछ स्थानों पर इस नृत्य को अग्नि की लपेटों के बीच युद्ध करते किया जाता है। हजारा ढाल का प्रतीक है। इन्हें विभिन्न मुद्राओं में घुमाकर यह नृत्य किया जाता है। प्रमुख वाद्य रमतूला, ढोलक, झीन्का, चमीटा, कसेरू आदि हैं।

पालना नृत्य

इसे चंगेल नृत्य भी कहते हैं। शिशु जन्म पर उसकी बुआ जब वधावा लेकर आती है। तब पालना/चगेलिया सिर पर रखकर महिलाओं द्वारा यह नृत्य सामूहिक रूप से किया जाता है। इसके साथ सोहर, बधावा, पालना आदि के गीत गाये जाते हैं। प्रमुख वाद्य ढोलक, मजीरा, रमतूला, नगड़िया हैं।

बधाई नृत्य

यह पुत्र जन्म उपलक्ष्य में हर्ष की अभिव्यक्ति का नृत्य है, साथ में गीत चलता है। वाद्य नगड़िया, रमतूला, ढोलक मजीरा आदि।

चांचर नृत्य

यह नृत्य पाई–डण्डा की ही एक अन्य शैली है। जिसका उल्लेख पहले चुके हैं।

चांचर मशाल नृत्य

यह चांचर नृत्य की ही एक शैली है, जो अग्नि मशालों के साथ खेली जाती है।

रैया

बुन्देलखण्ड के लोकगीत गायन की एक विधा है। जिसे केवल स्त्रियाँ ही गाती है। इस गायन में संगतकार भी स्त्रियों रहती है। गायन के साथ ढोलक एंव मंजीरे का प्रयोग होता है।

रतन कुंआरी मोखे सांकरे, अरे रैया अलबेली भरे पानी हां

इस गायन में दादरा का लय बाँट दिखता है। पूरे गीत में ठेके का प्रकार इस प्रकार होता है।

1	2	3	4	|	5	6	7	8
धा	ऽ	क	त	|	त	क	घि	क

बिलवारी

यह गायन भी स्त्रियों के द्वारा किया जाता है। इसमें स्त्रियां ढोलक और मंजीरा आदि के साथ भाग लेती है। इस गायन में कहरवा ताल का प्रयोग होता है।

मोसे देहरी चढ़ी ना जाय

इस प्रकार के गायन के साथ कहरवा ताल का ठेका कुछ इस प्रकार बजता है।

1	2	3	4	|	5	6	7	8
धा	ऽ	क	त	|	त	क	घि	न
•				|0				

कजरी

कजरी गायन भी स्त्रियों द्वारा होता है। स्त्रियाँ स्वयं ढोलक मंजीरे पर कजरी का गायन करती है।

कि हरे रामा श्याम बने लिलहारी ओढ़ लई सारी रे हारी

इस गायन में कहरवा ताल बजाया जाता है। जिसका "प्रकार" इस प्रकार होता है।

1	2	3	4	|	5	6	7	8
धा	ऽ	क	त	|	त	क	घि	क
•				|0				

यह गायन मध्य लय में प्रारम्भ होता है। पूरे गायन में ठेके का यही प्रकार बजता रहता है। लय आद्योपान्त एक सी ही रहती है। ना ही ठेके का प्रकार बदलता है और ना ही तिहाई या मुखड़े मोहरे का प्रयोग होता है।

<u>सैरा नृत्य</u>

सैरा–नृत्य भी बुन्देलखण्ड के प्रमुख नृत्यों में है। यह नृत्य अत्यधिक लोकप्रिय है तथा अत्यन्त उत्साह के साथ किया जाता है। यह सामयिक लोक नृत्य है। बरसात की रिमझिम फुहारों के बीच यह नृत्य आषाढ़ श्रावण के महीनों में किया जाता है। इस नृत्य में पुरूष तथा स्त्रियाँ सम सँख्या में भाग लेते हैं। आषाढ़ तथा श्रावण मास बुन्देलखण्ड के कृषकों के लिये आराम के दिन होते हैं अर्थात कृषि सम्बन्धी कार्य की जटिलता इन दिनों नहीं होती है। अच्छी बरसात होने से कृषक वर्ग का मन मयूर नाच उठता है। बुन्देलखण्ड में तालाब अधिक संख्या में हैं, जो बारिश के पानी से भर जाते हैं। उनमें धान की रोपाई की जाती है। ऐसे हर्ष एवं आह्लाद के क्षणों में स्त्री एवं पुरूष सैरा–नृत्य करते हैं। इस नृत्य में एक स्त्री एवं एक पुरूष की जोड़ी होती है। जितनी भी जोड़ियाँ भाग लेना चाहे, वह नृत्य में सम्मिलित हो सकती है। सैरा–नृत्य के साथ ढोलक या पखावज, नगड़िया, झीन्का मंजीरा, अलगोजा, तुरही आदि का वादन किया जाता है। नर्तक अपने हाथ में मूसल एवं मोर पंखों का गद्ठा लिये रहते हैं। नृत्य का प्रारम्भ पहले होता है। बाद में गीत को प्रारम्भ किया जाता है।

अथवा केवल पुरुष नर्तक एक हाथ में छोटे छोटे डंडे तथा दूसरे हाथ में मोरपंख के मूंठ लेकर वृत्ताकर खड़े हो जाते हैं तथा अपने दांये बांये खड़े नर्तकों के डण्डों पर डण्डा मारकर कभी तिरछे कभी आड़े कभी सीधे नृत्य–संगीत प्रस्तुत करते हैं। वाद्यों में ढोलक, मजीरा, रमतूला प्रयोग करते हैं। इस नृत्य के साथ सैरा–गीत भी गाते हैं।

साहुन सुहाने रे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
साहुन सुहाने, अरे मुरली बजे हो, भादौं सुहानी मोर
तिरिया सुहावन अरे जबहीं लगे, अरे खेलें पौर के दौर
असढ़ा तो उतरे रे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
असढ़ा तो उतरे, अरे सहुना लगे हो
बीरन लिबउआ अरे आए हैं, मैनें चुनरी धरी है रंगाय
बैठी तो रइयो रे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
बैठी तो रइयो, अरे गोरी सतखण्ड हो ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ खइयो डबों के पान
जब हम आवैं, अरे रण जूझ कें, तोरी मोतिन भराए हों मांग
हरवारें जावैं रे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
चरवारे जावै, अरे गोरी सतखण्ड हो ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ अरे पै पै परी री तुसार
तोरे अकेले अरे जियरा आवै ना, कि मोहे सूनो लगे सन्सार
काए को गई तीं रे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
काए को गई तीं, अरे बेला बाग में हो, ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ काए को तेरे टोरे अनार
काए को टोरी अरे चम्पा कली, तुमै डस लेबे कारे नाग

<u>पाई(सैरा के बाद गाई जाती है)</u>

सांवरे पिया तोरे बोलो में मरी जाऊं रे
जब नरबदा पैरन हो आईं –2
लहंगा भीजे तिज में मरी जाऊं रे

जब नरबदा गलुअन हो आई –2
घुघटा भीजे हिलोरों में मरी जाऊ रे साभार डॉ० वीणा श्रीवास्तव

नृत्य विलम्बित लय में प्रारम्भ किया जाता है। इसमें ताल कहरवा का वजन दिखाई देता है। जो लय–साम्य दिखता है वह कहरवा ताल को ही दर्शाता है। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो कहरवा ताल का ही प्रयोग होता है।
जिनके प्रकार उनको एक अलग स्वरूप प्रदान करते हैं।

धाऽ	ऽता	ऽऽ	कड़ान	।	धीधी	नाना	धीधी	नाना
धाऽ	ऽता	ऽऽ	कड़ान	।	धित	कधि	तक	धिन
धाऽ	ऽता	ऽऽ	कड़ान	।	धन	नध	नन	धन
धाऽ	ऽता	ऽऽ	कड़ान	।	धाता	धाता	धाता	धाता

तिहाई

धिं	ऽता	ऽक	धिंऽ	।	धिं	धिं	ता	ता

इस प्रकार के लयखण्डों में प्रारम्भ की चार मात्राओं में ढोलक या पखावज के बोलों की प्रधानता रहती है। खाली विभाग की चार मात्राओं में नगड़िया की प्रधानता रहती है। कभी कभी ढोलक केवल सम दिखाने का काम करती है। बाकी सात मात्राओं में नगड़िया ही बजती रहती है। कभी कभी ढोलक नगड़िया दोनों ही बन्द रहती हैं, केवल झीन्का ही बजाया जाता है। अर्थात सभी वादकों को एक–एक कर मौका दिया जाता है। इन सभी में कहरवा के लय–साम्य रहते हैं। प्रत्येक अन्तरे में लय बढ़ जाती है, जो अन्त तक अपने चरम को प्राप्त होती है। इसी द्रुत लय में गीत तथा नृत्य दोनों का स्वरूप बदल जाता है, जिसे "पाई" कहा जाता है। नृत्य के इस भाग में मूसल तथा मोर पंखों के साथ पद चाप (एक्शन) होते हैं। कभी कभी नृत्य के इस भाग में पाई के गीतानुसार दादरा ताल बजती है। पाई दादरा ताल से प्रारम्भ होकर अति द्रुत लय में समाप्त होती है।पाई में ताल के बोल जो सैरा गीत के साथ बजे हैं, वही बजेगें बस लय द्रुत हो जाएगी।

<u>झिझिंया नृत्य</u>

यह नृत्य नारे सुआटा (नौरता) कं अतंर्गत क्वार माह में किशोरी बालिकाओं द्वारा किया जाता है। झिझिंया के अन्दर प्रज्वलित दीपक रखा जाता है। उसका झिलमिल प्रकाश बाहर आता रहता है। केन्द्र में नर्तकी झिझिया सिर पर रखकर नृत्य करती है, शेष वृत्ताकार खडे होकर तालियों की थाप देती हैं। सभी महिलायें बारी बारी से नृत्य करतीं हैं। कहीं–कहीं कुवांरी बालिकाओं से लेकर वृद्ध महिलाओं तक को यह नृत्य करना परंपरागत रूप से अनिवार्य है। इस अवसर पर झिझिंया–गीत गाते हैं। वाद्यों में ढोलक, नगड़िया, झीन्का आदि प्रयुक्त होते हैं।

<u>ढीमरयाई/ढिमरियाई एवं कांडरा– नृत्य</u>

यह ढीमर जाति का नृत्य है जो विवाह अथवा अन्य मांगलिक अवसरों पर पुरूषों तथा महिलाओं द्वारा सम्मिलित रूप से किया जाता है। प्रमुख वाद्य रमतूला, खंजरी, लोटा, नगड़िया, ढोलक आदि होते हैं। नृत्य के समय प्रायः कहरवा, सजनई अथवा बिरहा लोक गीत गाते हैं।

नृत्य में तो नृत्य का प्रारम्भ ही केंकड़िया वाद्य से होता है। केंकड़िया पर आधार–स्वर लेकर– आलाप प्रारम्भ करते हैं, फिर साखी बोलते हैं। केंकड़िया प्रारम्भ से अन्त तक बजती रहती है। केंकड़िया पर गीत की धुन ही बजाते हैं।

ढिमरयाई बुन्देलखण्ड के प्रमुख नृत्यों में से एक है। यह ढीमर जाति के लोगों द्वारा किया जाता है, इसीलिये इसका नाम ढिमरयाई पड़ा। यह नृत्य पुरूषों के द्वारा किया जाता है। नर्तक केवल एक पुरुष होता है। इस नृत्य के साथ ढोलक, मंजीरा, ढपली, लुटिया आदि बजते हैं तथा नर्तक अपने हाथों में केंकड़िया लिये रहता है। इस प्रकार नर्तक अकेले तीन दायित्वों (गायन, केंकड़िया वादन एवं नृत्य) का निर्वाह करता है। बुन्देली लोकगीतों में ढिमरयाई गीत की धुन अलग प्रकार की होती है तथा उसके साथ बजने वाली ताल का प्रकार भी अलग होता है, जो अलग से पहिचाना जा सकता है। यह नृत्य उत्सवपरक नृत्य है। त्यौहारों या पारिवारिक उत्सव के समय अपने समाज के समक्ष यह नृत्य किया जाता है। इस में नर्तक धोती, बन्डी, पहिनता है।एक अगौंछा सिर तथा एक अगौंछा कमर में बांधता है। पैरों में घुंघरू तथा हाथों में केंकड़िया लिये रहता है। नृत्य का प्रारम्भ केंकड़िया से होता हैं। केंकड़िया से वह आधार स्वर निर्धारित करता है। फिर साखी बोलता है।

सदा भवानी दाहिने, सम्मुख रहे गणेश
तीन देव रक्षा करें, ब्रह्म बिस्नू महेश

इसके बाद गीत का प्रारम्भ हाता है।

घेर में नार लगें प्यारी, जींसै चलें दुनिया सारी
सबसे पैले उठे सबेरी, झारा पौंछी कर डारी।।

गीत के साथ ही अवनद्य वाद्य शुरू होते हैं। स्थाई अन्तरे के बीच के समयान्तर को कॅकड़िया की धुन बजाकर द्वारा पूरा किया जाता है। इस नृत्य में नगड़िया का प्रयोग लड़ी के रूप अधिक रहता है, जो कि तिहाई लगा कर समाप्त होता है। इस नृत्य में कहरवा ताल का प्रयोग होता है। नृत्य के ठेके के प्रकार की यह विशेषता रहती है कि सुनने में दादरा ताल सा लगता है। इस प्रकार के ठेके में दादरा एवं कहरवा दोनों की लय दिखाकर ही गाया जा

सकता है। ठेका चौगुन की लयकारी में बजता है। कहरवा में दादरा ताल की लयकारी दिखती है। ढोलक पर जो कहरवा के प्रकार बजाये जाते हैं, उनमें ज्यादा विविधता नहीं होती है वह एक या दो प्रकार के होते हैं। लेकिन उसमें नगड़िया का मिश्रण विविधता पैदा करता है, केवल वजन का अन्तर होता हैं। कभी धिं पर अधिक वजन दिया जाता हैं तो कभी ता पर। यह नर्तक के पद चाप एवं भावों पर तथा वादक के मूड पर निर्भर करता है। कभी कभी केवल ता ही बजाते है

1	2	3	4	।	5	6	7	8
धिंता	गता	तिंता	गता	।	धिंता	गता	तिंता	गता
धिताधा	ऽगधा	तितता	ऽगता	।	धितधा	ऽगधा	तितता	ऽगता
ऽता	ऽगता	ऽता	तागता	।	धिंता	तागता	ऽता	गता

इन्ही प्रकारों को पलटते रहते हैं। जिसमें नवीनता दिखाई देती है। स्थाई एवं अन्तरे के बीच समयान्तर के भराव के लिए नगड़िया पर लड़ी सी बनाकर बजाते हैं।

लमटेरा

"बंसी बजाई नइयाँ बा दिन की" इस प्रकार के गायन को बुन्देलखण्ड में लमटेरा के नाम से जाता है। इसका गायन पुरुषों द्वारा किया जाता है। संगतकार के रूप में पुरूष ही भाग लेते हैं। इसमें ढोलक या पखावज, झीन्का, मंजीरा तथा लोटे का प्रयोग होता है। इन वाद्यों में झीन्का. मंजीरा तथा लोटे की प्रधानता रहती है। इसको ताल कहरवा में ही गाया जाता है। ंक की पहिचान लोक गायक या वादक इस प्रकार करते हैं।

1	2	3	4	।	5	6	7	8
झिं	का	छिं	का	।	छिं	का	झिं	का

जिसका शास्त्रीय स्वरूप इस प्रकार का होता है।

1	2	3	4	।	5	6	7	8
धाती	धाती	ऽता	धाती	।	धाती	धाती	ऽता	धाती

ठेके का यही स्वरूप चलता है। अन्त में लय बढ़ा दी जाती है।

रावला नृत्य

यह ढीमर तथा दलित जातियों का गायन एवं नृत्य है। इसके साथ संवाद एवं अभिनय (हास्य प्रधान) स्वांग के साथ होता है। स्त्रियों की भूमिका पुरूष ही करते हैं। प्रमुख वाद्य, हरमोनियम, झीन्का, मजीरा ,डमरू तथा सारंगी हैं।

स्वांग

स्वांग हास्य रस की एक विधा हैं। जिसमें गीत के अनुरूप ही नर्तक उस कलाकार का वेश धारण कर, उसी के हाव भाव एंव नृत्य के पदचापों का प्रदर्शन करता है। इसमें गीत ताल कहरवा या दादरा में ही अधिकतर होते हैं। यह विधा भी पुरूष वर्ग ही करता है। इसमें महिलायें भाग नहीं लेती हैं।

धरियो नै दो दो गगरिया, बेला तुम्हें लग जैहे नजरिया

इस गीत में ताल दादरा बजाया जाता है। ढोलक के साथ मंजीरा, नगड़िया, झीन्का आदि बजाया जाता है। इस गीत में मध्य लय का ही प्रयोग होता है। गीत मध्य लय में प्रारम्भ होता है। अन्तिम चरण में लय बढ़ा कर समाप्त कर दिया जाता है।

1	2	3	।	4	5	6
धा	धिं	ना	।	ता	धिं	ना

<u>कहरवा नृत्य</u>– <u>कहार जाति</u> के मांगलिक पर्वो पर किया जाने वाला नृत्य है।

<u>कोलिहा नृत्य–</u>

चित्रकूट के निकट पाठा क्षेत्र के <u>कोल भीलों</u> द्वारा यह नृत्य विशिष्ट अवसरों पर किया जाता है। साथ में कोलिहाई गीत गाते हैं। वाद्य में ढोलक, नगड़ियां, कसेरू का प्राधान्य है।

<u>ख्याल</u>

गायन की इस विधा पर भी पुरूषों का एकाधिकार है। ख्याल गायन में भी ढोलक नगड़िया, झीन्का, मंजीरा आदि का प्रयोग होता है। आरम्भ अति विलम्बित लय में किया जाता हैं, जिसमें ढोलक पर केवल सम दिखाया जाता है। केवल धा या ता बजाते हैं।

अरे हिल मिल फरिया फाग की,
बालापन की दोस्ती हम सें ना छोड़ी जाय

धीरे धीरे लय बढ़ती जाती है। जिसमें ताल कहरवा बजाया जाता है।अकुत्रिजो कुछ इस प्रकार होता है।

<u>धातिं</u>	<u>धातिं</u>	<u>ऽऽ</u>	<u>ताधिं</u>	।	<u>धातिं</u>	<u>धातिं</u>	<u>ऽऽ</u>	<u>ताधिं</u>

स्थाई और अन्तरे के बीच के अन्तराल में लय बढ़ जाती हैं तथा तिहाई लगा ंकर पुनः उसी ठेके पर आ जाते हैं।

ख्याल का उपर्युक्त प्रकार ठेठ गांव में देखने को मिला। कई ख्याल–गायक चंग वाद्य को बजाकर ख्याल गायन करते हैं। ये ख्याल में किसी न किसी गाथा का गायन करते हैं।

<u>भगतें</u>

बुन्देलखण्डी लोकगीत की अनेक विधायें हैं। उनमें कुछ विधाएं प्रमुख रूप से पूजा अर्चना से सम्बधित होती हैं। देवी गीत इन्ही श्रेणी में आते हैं। देवी गीत के अन्तर्गत अनेक प्रकार के गीत गाये जाते हैं। जिनमें ''भगत'' का प्रमुख स्थान है। भगत पुरूषों द्वारा गायी जाने वाली विधा हैं। इस प्रकार के गीतों में ढोलक या पखावज, झीन्का, नगड़िया, लोटा, मंजीरा करताल आदि बजाये जाते हैं।

अरे जगतारिन आई बेला बाग में हो मां

गीत स्थाई विलम्बित लय में प्रारम्भ होता है। इसके साथ केवल घन वाद्य ही बजाये जाते हैं। चूँकि लय अति विलम्बित होती है, अतः केवल घन वाद्यों का प्रयोग सुन्दर प्रतीत होता है। गीत के स्थाई को कई बार दुहराते हैं। इसके साथ झीन्का तथा मंजीरा बजाया जाता है। उसमें कभी कभी सम छोड़ कर कभी सम से, जो इस प्रकार होता है।

1	2	3	4	।	5	6	7	8
<u>छक</u>	ऽ	ऽ	<u>छक</u>	।	<u>छक</u>	ऽ	ऽ	<u>छक</u>
ऽ	<u>छक</u>	ऽ	<u>छक</u>	।	ऽ	<u>छक</u>	ऽ	<u>छक</u>
ऽ	ऽ	<u>छक</u>	<u>छक</u>	।	ऽ	ऽ	<u>छक</u>	<u>छक</u>
ऽ	<u>छक</u>	<u>छक</u>	<u>छक</u>	।	ऽ	<u>छक</u>	<u>छक</u>	<u>छक</u>

स्थाई को गाते–गाते थोड़ी लय बढ़ जाती है। जिसके साथ ही नगड़िया बजाना शुरू किया जाता है। नगड़िया तिहाई बजाने के साथ प्रारम्भ होती है।

धिं ऽता ऽक्र धिन् । धिं धिं ता ता

तिहाई के सम साथ नगड़िया धीरे–धीरे प्रारम्भ करते हैं।

ऽ ऽ तड़ तड । ऽ ऽ तड़ तड

बजाते–बजाते इसी बोल की लड़ी बाँध लेते हैं, जो कम से कम 4 या 8 आवर्तन तक भी हो सकती है, तथा तिहाई के साथ समाप्त करते हैं। तिहाई इस प्रकार की होती है।

धा क्ड़ान ऽऽ धा । कड़ान ऽऽ धा क्ड़ान । धा
|•

प्रत्येक अन्तरे के साथ लय बढ़ती जाती है। मध्य लय में आने पर अवनद्य वाद्य अर्थात ढोलक या पखावज बजाया जाता है, किन्तु अत्यन्त क्षीण वादन होता है, क्योंकि इसमें झीन्का, मंजीरा, नगड़िया, प्रमुख रूप से बजाये जाते हैं। ढोलक या पखावज गौड़ रहते हैं। इसमें कहरवा ताल बजाया जाता है, जिसके प्रकार का स्वरूप कुछ इस प्रकार होता है।

धाऽ	कधि	नक	धिन	।	ताऽ	कधि	नक	धिन
धिं	क्र	धा	धिन	।	ऽ	ऽ	कत	ऽ
धिं	ऽतं	नक	धिन	।	धिं	ऽत	नक	धिन

नगड़िया की प्रधानता रहने के कारण प्रत्येक अन्तरे के बाद तड़ तड़ बोल लड़ी बजाई जाती है। गीत के अन्तिम भाग में लय बढ़ जाती है। तिहाई के साथ गीत की समाप्ति होती है।

धा तिं ऽ धा । तिं ऽ धा तिं

बीरोठ

बीरोठ का देवी गीतों में प्रमुख स्थान है। देवी गीतों के गाने के क्रम में बीरोठ अन्त में गाया जाता है। इसके बाद कोई भी देवी गीत नहीं गाये जाते हैं। देवी के दरबार या नवरात्र आदि पर तांत्रिक, मांत्रिक, गुनिया, ओझा आदि की उपस्थित में यह बीरोठ गाई जाती है। क्योंकि इसका गायन, शक्ति को मनुष्य के ऊपर बुलाने के लिये किया जाता है। इसी लिये बीरोठ की लय अति विलम्बित से अति द्रुत तक जाती है। इसके सहारे जिस व्यक्ति पर शक्ति आती है वह झूमने लगता है और लय की चरम सीमा पर पहुँचने पर वह शक्ति आ जाती है। शक्ति प्राप्त हुआ मनुष्य, फरियादिओं की समस्यायें सुलझाने लगता है। बीरोठ गायन में नगड़िया, तांसा, झीन्का, मंजीरा प्रमुख रूप से होता है। मुख्य रूप में नगड़िया ही बजायी जाती हैं। ढोलक या पखावज वाद्य का प्रयोग अत्यन्त अल्प रूप में होता है। धा, या ता, धिं, या तिं के बोल ढोलक पर बजते हैं या एक या दो आवर्तन में ही ढोलक सुनायी पड़ती हैं। देवी गीत के इस गायन को पुरूष वर्ग ही गाता है। स्त्रियाँ बीरोठ नहीं गाती हैं। प्रारम्भ अति विलम्बित लय में होता है। इस समय केवल झीन्का या तांसा ही बजता है। गीत की पहली पंक्ति को कई बार दुहराया जाता है।

देव देव अटक नदी बैरिन भई

छक	ऽ	ऽ	छक	।	छक	ऽ	ऽ	छक
ऽ	छक	ऽ	छक	।	ऽ	छक	ऽ	छक
ऽ	ऽ	छक	छक	।	ऽ	ऽ	छक	छक
ऽ	ऽ	ऽ	छक	।	ऽ	ऽ	ऽ	छक

इस प्रकार गीत का प्रारम्भ होता है। पहली पंक्ति के बाद दूसरी पंक्ति में थोड़ी लय बढ़ जाती है और उसी के साथ नगड़िया बजना प्रारम्भ हो जाती है।

हे कैसें के उतरें पार, बेहनार सिंह, अटक नदी बैरिन भई

ऽ	ऽ	ऽ	तड	।	ऽ	ऽ	ऽ	तड
ऽ	ऽ	तड	तड	।	ऽ	ऽ	तड	तड
ऽ	तड	तड	तड	।	ऽ	तड	तड	तड

इसके बाद नगड़िया पर तड तड तड तड. बोल की लड़ी बाँध दी जाती है जो दो या 4 आवर्तन तक बजाते हैं और तिहाई लगा कर ठेका बजाने लगते हैं।

तड तड कड़ान तड । तड़ कड़ान तड़ तड़ । तिहाई

प्रत्येक अन्तरे के बाद लय बढ़ती जाती है। लय सदैव अन्तरे की दूसरी पंक्ति से बढ़ती है, जिसमें नगड़िया के साथ अल्परुप में ढ़ोलक शामिल रहती है।

धा		ऽ	तर्र	रक	।	ता	ऽ	तर्र	रक
तर्र		रक	तक	धिन	।	तर्र	रक	तक	
	धिन								
धा		तर्र	रक	धिन	।	ता	तर्र	रक	
	धिन								
तर्र		रक	तर्र	रक	।	तर्र	रक	तर्र	रक
धा		तिं	नक	धिन	।	ता	धिं	नक	
	धिन								
धा		ऽति	नक	धिन	।	ता	ऽति	ऽक	
	धिन								
तड़तड़		धिं	तड़तड़	धिं	।	तड़तड़	धिं	तड़तड़	धिं

द्रुत लय होने पर नगड़िया, तांसा ही अधिक सुनाई पड़ता है। चरम सीमा पर पहुँच कर तिहाई लगाकर गीत की समप्ति होती है।

दुगुन में कड़ाऽन धाक्डाऽ ऽनधा क्डाऽन । धा

।•

गोटें

बुन्देलखण्ड में गोटें लोकगाथा के रूप में गाई जाती हैं। इसमें कारसदेव का प्रसंग रहता है। चौथ के दिन गांव के कारसदेव के चबूतरे पर ही इसका गायन होता है। गोटों के साथ ढाँक बजाई जाती है। ढांक में दाब–दांस के लिए एक डोरी लगाई जाती है, जिसे पैरों में फंसाकर लय के साथ खींचा व छोड़ा जाता है।अकुत्रिबाएं मुख पर लकड़ी से प्रहार करने के साथ ही डोरी को पैरों से दबाकर खींच दिया जाता है। जिससे डिम बोल थोड़ा खिंच जाता है और दाब–दांस के साथ सुनाई पड़ता है।

1	2	3	4	5	6	7	8
डिम	टक	डिम	टक	डिम	टक	डिम	टक
"	"	"	"	"	"	"	"

आल्हा वीर रस का गायन है। बुन्देलखण्ड में आल्हा बहुत प्रसिद्ध है। क्योंकि आल्ह खण्ड के सभी नायक और उनसे सम्बद्ध पात्र बुन्देलखण्ड की भौगोलिक सीमा के अन्दर के निवासी रहे हैं। बावनगढ़ की लड़ाई का ब्योरा आल्हा–गायन द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। सभी लड़ाइयों की कहानी आल्हा के माध्यम से लोकगाथा के रूप में आज भी चौमासें भर चौपालों में गाई जाती हैं। आल्ह–छंद के गायन में बदले के प्रसंग, हरण का प्रसंग ऐसे ही न जाने कितने प्रसंग है, जिन्हें गाते–गाते तथा सुनने मात्र से ही भुजाएं फड़कने लगती हैं।

लोक नृत्य **Folk Dance**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

आल्हा गायन के साथ ढोलक तथा मंजीरा बजाया जाता है। मंजीरा अनवरत बजता रहता है। जिससे लय बराबर दिखती रहती है जबकि ढोलक बीच–2 में रूकती चलती है। आल्हा गाते समय अंग–अंग फड़कने लगते हैं। गायक जोश में बीच–बीच में म्यान से तलवार भी निकाल लेता है।

यहाँ पर मछलाहरण का प्रसंग तथा उसके साथ बजाई गई बजौटी का वर्णन किया जा रहा है। सबसे पहले देवी–देवताओं का सुमिरन(स्मरण) कर प्रसंग पर आते है।

मैं पहले सुमिरों परमेसुर को, जिनने पिन्डी रच दई हमार
दूजे सुमिरों मैं धरती मात को, जहाँ वहाँ रूप धरे दोऊ पार
तीजे सुमिरो माता अपनी, कुंछा मा नाय रही नौ मास
चौथा सुमिरों मैं गुरू अपने कां, जो साथा देत दुधुअन क्यार

<u>स्त्रियों के गीत</u>

बुन्देलखण्ड के लोक संगीत में सन्स्कार परक लोकगीत प्रायः स्त्रियों द्वारा ही गाये जाते हैं। जिनमें कुछ लोकगीत बिना ढोलक के ही गाये जाते हैं तथा बाकी ढोलक मंजीरें, झीन्का आदि के साथ गाये जाते हैं। इन लोक गीतों में अधिकतर कहरवा एवं दादरा ताल का प्रयोग होता है। जिनमें कहरवा ताल के बोल इस तरह के होते हैं।

1	2	3	4	|	5	8	7	8
क	त	क	त	|	धि	न	धि	न
•				|0				
धा	ऽ	क	त	|	ऽ	क	धि	न
ऽ	क	ति	न	|	ऽ	क	धि	न

<u>दादरा ताल के बोल</u>

1	2	3	|	4	5	8
धा	क	ति	|	<u>नक</u>	धी	ना
•			|0			

बुन्देलखण्ड के लोकगीतों एवं लोकनृत्यगीतों के साथ बजने वाले ताल या लय वाद्यों के अतिरिक्त स्वर–वाद्यों का भी उतना ही महत्व है।

गीतों का आधार–स्वर लोकजन भले ही कभी चक्की की घरर–घरर से ले लेता है और कभी धोबी के कपड़े धोने की आवाज छपाक–छपाक भी इनके गीतों के आधार स्वर हो जाते हैं।

राई नृत्य में गीत के बीच–बीच में अलगोजा द्वारा भराव करते हैं। अलगोजा में वे गीत की धुन को ही दोहराते हैं।

इसी प्रकार बरेदी नृत्य में पद–संचालन के साथ एक विशेष प्रकार की धुन बराबर नृत्य के साथ बांसुरी या अलगोजा पर बजती रहती है।

सैरा–नृत्य में अलगोजा एवं तुरही का प्रयोग करते हैं। प्रारम्भ में ही तुरही में तु–तु–तु–तु का एक उत्साह, प्रसन्नता का स्वर व्यक्त करते हैं, बाद में सैरा–गीत के साथ–साथ अलगोजा उसी धुन में बजता रहता है।

रमतूला का प्रयोग मांगलिक अवसर पर करते हैं, उसमें भी प्रसन्नता से पूर्ण स्वरों का उदघोष होता है।

झिंझिया नृत्य

लोक नृत्य **Folk Dance**

झिझिया नृत्य एक ऐसा पंथानुसार नृत्य है जो बालक बालिकाओं के द्वारा नवरात्रि के अवसर पर किया जाता है। यह गुजरात के डांडिया नृत्य की तरह का माना जा सकता है, लेकिन उससे काफी अलग है। इस अवसर पर लड़कियां एक नए घड़े में कई छेद करती हैं और उसमें थोड़ा सा पानी डालती हूं। उसके अंदर दीपक जलाते हैं। घड़े को सिर पर रखकर नाचती हैं, और दरवाजे दरवाजे जाती हैं।अकुत्रियह सुआटा नृत्य का ही एक भाग है। जहां जहां नृत्य करने जाती हैं, उस परिवार के लोग उस घड़े में पैसे डालते हैं। इस अवसर पर यह लोग गीत गाया जाता है।:–

हरी री चिरैया, तोरे पियरे पियरे पंख। सो उड़ उड़ जाए बबूरा तोरी डार।।
काजल की कजरौटी ल्याव। सेंदुर की सिदरौटी ल्याव।
आंचल फार उढ़निया ल्याव। बेला भर तिल चाउंरी ल्याव।
ऊपर गुड़ बटी धराव। पांच टका पानन के ल्याव।
लोंग सुपारी रुपया ल्याव। आज विदा हो रही झिंझिया जू

यद्यपि अभी तक के जितने भी इन त्योहारों का वर्णन ऊपर किया गया है, यह सभी वर्षा ऋतु के अवसर पर ही होते हैं।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सन्दर्भ /साभार / सौजन्य

लोक नृत्यों के चित्र समाचारपत्रों से साभार

ल्म.भ्प.ठनदकमसींदकं.2020 छतंजल`वदह हममज

ठव्ह्ज्ञ ठन्छक्म्स्ज्ञ सवा`ीपजल ।स्स् त्म्फन्प्त्म्क हममज ांजीं बीपजतं दतंजलं दंजलं `दक`जींद`मम च46

इंदकं स्वाहममज छतंजलं अंकलं

2015ण्269421ण्ठनदकमसींदक.ज्ञ अंकलं लंदजतं चंहम 148 संउजमतं चंहम 152 अंकलं विजव 115

`सस विदज इम इसा जव`मम`ीपककमद `वतक

लोक नृत्य Folk Dance